लेखांकन में संगणक (कम्प्यूटराईज़्ड एकाउंटिंग) के प्रयोग का अध्ययन

पवन कुशवाह
शोधार्थी, वाणिज्य विभाग, बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल (म.प्र.) भारत

I प्रस्तवाना

संपूर्ण विश्व में आज तक का इतिहास है कि किसी न किसी राजा महाराजा व्यापारी, साहूकार सभी अपने व्यवसाय या आय–व्यय के हिसाब व लेखा जोखा के लिए निश्चित तौर पर एक न एक मुनीम अवश्य ही रखते थे। ताकि वह समस्त लेन देन की संपूर्ण जानकारी प्राप्त कर सके पर धीरे धीरे समय के बदलाव के साथ लोगों की विचार व विचार धाराओं में तथा लेखांकन पद्धितियों में तकनीकी में परिवर्तन होता रहा। जिसका प्रभाव कही न कही किसी न किसी रूप में प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से पड़ता है। वर्तमान युग में यह परिवर्तन लेखांकन की विभिन्न विचार धाराओं पर हो रहा है। क्योंकि लेखांकन के भारतीय बही खातें के प्रयोंग के साथ साथ लेखांकन पद्धतियों में बहुत से परिवर्तन समय समय से आवश्यकता अनुसार किये गये है। परंतु जब से संगणक (कम्प्यूटर) में लेखांकन पद्धति का अविष्कार हुआ है। तब से लेखांकन में समय की बचत के साथ साथ त्रुटिया पूर्ण रूप से समाप्त हुई हैं व लेखांकन की शुद्धता पूर्णतः विश्वसनीय होती गई है। क्योंकि लेखांकन के माध्यम से कई वर्षों पुराने से पुराने हिसाब किताब को हम मिनटों में देख सकते है व कई वर्षो तक सुरक्षित रख सकते है। संगणक के माध्यम से कई प्रकार के सॉफ्टवेयर व ऑनलाईन (इंटरनेट) के माध्यम से कम्प्यूटराईज़्ड एकाउंटिंग का चलन व प्रचलन धीरे–धीरे बढ़ता ही जा रहा है। इस प्रचलन के द्वारा लोग कम्प्यूटरकृत लेखांकन करके समय व रूपयो की बचत करने में सक्षम है। हमने इस शोध में यही अध्ययन करा है की लेखांकन संगणक के माध्यम से होने पर क्या–क्या फायदे हमें हुये है। वर्तमान में ऑनलाईन लेखांकन का भी प्रयोग अधिक किया जा रहा है। क्योंकि आयकर देने वाले 100 दुकानदार के बीच यह सर्वेक्षण कर पाया गया कि 70 प्रतिशत दुकानदार संगणक के माध्यम से लेखांकन करना पसंद करते है।

II उद्देश्य

(क) संगणक के माध्यम से हो रहे लेखांकन के बारे में पता लगाना

(ख) लेखांकन में संगणक कितना उपयोगी है पता लगाना

(ग) संगणक के आने से क्या लेखांकन कीं प्रक्रिया में बदलाव आया है क्या?

(घ) भारतीय बही खाता प्रणाली व कम्प्यूटरीकृत लेखांकन में से कौन सी पद्दिती सरल है

(च) वर्तमान में कौन सी पद्दिती का चलन सबसे ज्यादा है

III साहित्य समीक्षा

(क) प्रोफेसर एस.पी गुप्ता के अनुसार "कम्प्यूटरों ने वर्षों के गणना कार्य को महीनों में , महीनों की गणना कार्य को दिनो में, दिनो की गणना कार्य को मिनटो में तथा मिनटो की गणना कार्य को सेंकंडो में करना संभव बना दिया है।"

(ख) प्रोफेसर एस.पी गुप्ता के अनुसार "आज कम्प्यूटर पर शीघ्रता से गणना कार्य की सुविधा उपलब्ध होने के कारण सुगमता से संपादित किये जा सकते हैं।"

(ग) डी.के. गोयल, राजेश गोयल, शैली गोयल के अनुसार "बाजार में कई प्रकार के लेखा सॉफ्टवेयर उपलब्ध हैं। भारत में इस्तेमाल किये जाने वाले सबसे ज़्यादा प्रचलित सॉफ्टवेयर टेली व ई एक्स है। लेखा सॉफ्टवेयर कम्प्यूटरीकृत लेखांकन प्रणाली का अभिन्न अंग होता है। सॉफ्टवेयर लेने से पहले उसे इस्तेमाल करने वालों के ज्ञान के स्तर को ध्यान में रखना अति आवश्यक है। क्योंकि अंततः लेखा की ज़िम्मेदारी मनुष्य पर ही है न कि किसी कम्प्यूटर पर।"

(घ) डॉ ओ.पी शर्मा डॉ के.के शर्मा, डॉ डी.के शर्मा के अनुसार"लेखांकन तथा वित्तीय क्रियाओं में कम्प्यूटर की सहायता से तथ्य संगणना का मुख्य कार्य किया जाता है।"

(च)एम.जी. राठी, गिरिश कुसुमाकर के अनुसार"लेखांकन सॉफ्टवेयर आपको समय और पैसा बचाने में मदद कर सकती है, और अपने व्यवसाय में आपको बहुमूल्य अंतदृष्टि प्राप्त कर सकता है।"

(छ) एम.सी. बड़जात्या एवं डॉ प्रवीन सक्सेना के अनुसार"कम्प्यूटरीकृत लेखा पद्धिति ने लेखांकन प्रक्रिया को स्वचलित कर लागत में कमी तथा कार्यक्षमता में वृद्धि कर दी है। कम्प्यूटरीकृत लेखांकन से लेखांकन कार्य अधिक सटीक, तीव्र व त्रुटिरहित हो जाता है।"

IV शोध प्रवधि

उक्त विषय में हम लेखांकन में संगणक के अनुप्रयोग के अध्ययन के बारे में बात कर रहें हैं। इस विषय के लिए हमने दैवनिदर्शन विधि का चयन करा है, क्योकि इस विषय को समझने व समझाने हेतु यह विधि ही सर्वोत्तम होगी। वर्तमान में विभिन्न प्रकार के व्यापार, संस्था, स्कूल, विश्वविद्यालय में समस्त लेखांकन कार्य सम्पन्न करने हेतु संगणक (कम्प्यूटर) का प्रयोग किया जाता है। यह प्रयोग लेखंकन के लिये बहुत ही उत्तम होता है, क्योकि लेखांकन में पहले बही खाते का प्रयोग करा जाता था। वर्तमान में अभी भी कई साहूकार, व्यापारी आज भी बही खाता प्रणाली का उपयाग करते है, हिसाब रखने के लिये परन्तु इस भारतीय बही खाता प्रणाली धीरे–धीरे लुप्त होने की कगार पर पहुंच गई है। क्योकि बही खाता रखना आज कल पहले से कई गुना खर्च व समय अधिक लेता

है और इसे प्रयोग करने में कई प्रकार की परेशानियों का सामना करना पड़ता है क्योकि यह हर किसी को आसानी से समझ नही आती है न ही हर कोई इस प्रणाली को दैनिक प्रयोग में लाने से सक्षम नही है। सबसे ज्यादा इस प्रणाली में समय अधिक लगता है क्योकि मोटी–मोटी बहियों में हिसाब लेने देने लिखना व इसे कई वर्षो तक संग्रह कर रखना संभव नही हो पाता है परन्तु संगणक (कम्प्यूटर) माध्यम से करा गया समस्त लेन–देन कई वर्षो तक आसानी से सुरक्षित रखा जा सकता है और पूर्ण शुद्धता के साथ कम्प्यूटर के माध्यम से कितना आय कितना व्यय हुआ है चंद मिनटों में समस्त हिसाब को देखा जा सकता हैं व पहले कई वर्षो का हिसाब हम कुछ ही मिनटो में बिना किसी परेशानी के देख सकते हैं। वर्तमान में कम्प्यूटरिकृत लेखांकन में भी कई प्रकार के सॉफ्टवेयर के माध्यम से सम्पन्न हो रहे है क्योकि इन सॉफ्टवेयर के माध्यम से लेखांकन का हिसाब आय–व्यय सबका एक साथ, या अलग–अलग अपनी सुविधा अनुसार हम इन सॉफ्टेवयर के माध्यम से देख सकते है जिससे संगणक के व सॉफ्टेवयर के प्रयोग से लेखांकन और भी ज्यादा अधिक प्रभावशाली हो जाता है। वर्तमान में कम्प्यूटर के माध्यम से लेखांकन व लेखांकन को ऑनलाईन (इंटरनेट) के द्वारा करने का प्रचलन दिन–प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है क्योकि ऑनलाईन (इंटरनेट) के माध्यम से लेखांकन करना आसान होने के साथ सुविधाजनक होता है एक ही स्थान पर बैठकर हम कहीं भी और कभी भी हिसाब देख सकते है एवं ऑनलाइन अकाउंटिग के माध्यम से यह जान सकते है कि कितना लेन–देन हुआ है जिसे हम ऑनलाईन एकाउंटिंग कहते हैं जिसका प्रचलन काफी बड़ा है। हमने सौ दुकानदार जो आयकार दाता है जिला भोपाल (म.प्र.) उनके बीच जाकर हमने यह जानने की कोशिश की, हमने 125 आयकर दाता दुकानदारों को लिया फिर उसमें से हमने दैवनिदर्शन विधी के माध्यम से 100 लोगों का चयन करा जिनसे हमने साक्षातकार व प्रश्नावाली के माध्यम से जानकारी प्राप्त की जो हमारा प्रथमिक समंक है और इसके अलावा पुस्तकों के माध्यम से द्वितीय समंक एकत्रित करा है।

प्रश्नावाली में पूछे जाने वाले प्रश्न

(क) लेखांकन का कौन सा माध्यम आप उपयोग करते है?

(ख) संगणक के माध्यम से लेखांकन आपको कैसा लगता है?

(ग) भारतीय बही खाता व कम्प्यूटरीकृत लेखांकन कौन सा ज़्यादा उपयोगी है?

(घ) लेखांकन की कौन सी पद्विती समय की बचत करती है?

(च) हिसाब का लेखा करने पर कौन–सी पद्विती मितव्ययी है?

(छ) किस पद्विती को सीखना आसान है?

(ज) आप भविष्य में लेखांकन की कौन–सी पद्विती अपनाना चाहते हैं?

(झ) आयकर देने की गणना करते समय किस पद्विती से समय बचता है?

(ट) लेखांकन हेतु किस पद्विती में तकनीक अच्छी है?

(ठ) किस पद्विती में लेखांकन में अधिक शुद्वता होती है?

V परिणाम एवं विश्लेषण

क्र	प्रश्न	संगणक / सरल / ज्यादा	बही खाता / कठिन / कम	दोनों / ठीक
1.	लेखांकन का कौन सा माध्यम आप उपयोग करते है?	79%	15%	6%
2.	संगणक के माध्यम से लेखांकन आपको कैसा लगता है?	85%	12%	03%
3	भारतीय बही खाता व कम्प्यूटरीकृत लेखांकन कौन सा ज़्यादा उपयोगी है?	75%	20%	05%
4.	लेखांकन की कौन सी पद्विती समय की बचत करती है?	82%	18%	00%
5	हिसाब का लेखा करने पर कौन–सी पद्विती मितव्ययी है?	78%	18%	04%
6.	किस पद्विती को सीखना आसान है?	86%	12%	02%
7.	आप भविष्य में लेखांकन की कौन–सी पद्विती अपनाना चाहते हैं?	82%	14%	04%
8.	आयकर देने की गणना करते समय किस पद्विती से समय बचता है?	84%	16%	00%
9.	लेखांकन हेतु किस पद्विती में तकनीक अच्छी है?	76%	18%	06%
10.	किस पद्विती में लेखांकन में अधिक शुद्वता होती है?	83%	12%	05%

VI शोध विश्लेषण

उक्त शोध में हमने विभिन्न प्रश्नों के माध्यम से हमने पाया की प्रश्न क्रं. 1 के अनुसार 79 प्रतिशत लोग संगणक 15 प्रतिशत लोग बाही खाता व 6 प्रतिशत लोग दोनों पद्धति का उपयोग करते है प्रश्न क्रं. 2 के अनुसार 85 प्रतिशत लोगो के अनुसार सरल है और 12 प्रतिशत लोगो के अनुसार कठिन और 3 प्रतिशत लोगों को दोनों ही माध्यम ही ठीक लगते है। प्रश्न क्रं. 3 के अनुसार 75 प्रतिशत लोगों के अनुसार संगडक लेखाकंन व 20 प्रतिशत लोगों के अनुसार बही खाता पद्धति व 5 प्रतिशत लोगों के अनुसार दोनों ही पद्धति ज्यादा उपयोगी है। प्रश्न क्रं. 4 के अनुसार 82 प्रतिशत लोगों के अनुसार संगडक लेखाकंन 18 प्रतिशत बही खाता पद्धति समय की बचत करती है। प्रश्न क्रं. 5 के अनुसार 78 प्रतिशत लोगों के अनुसार संगडक लेखाकंन 18 प्रतिशत लोगों के अनुसार बही खाता पद्धति व 4 प्रतिशत लोगों के अनुसार दोनों ही माध्यम मितव्ययी है। प्रश्न क्रं. 6 के अनुसार 86 प्रतिशत लोगों के अनुसार संगडक लेखाकंन 12 प्रतिशत लोगों के अनुसार बही खाता व 2 प्रतिशत लोगों कें अनुसार ही पद्धति सीखना सरल है। प्रश्न क्रं. 7 के अनुसार 82 प्रतिशत संगडक लेखाकंन 14 प्रतिशत बही खाता व 4 प्रतिशत लोग दोनों पद्धति भविष्य में अपनाना चाहेत है। प्रश्न क्रं. 8 के अनुसार 84 प्रतिशत लोग संगडक लेखाकंन 16 प्रतिशत लोग बही खाता पद्धति के माध्यम से आयकर की गणना करने में समय की बचत करते है। प्रश्न क्रं. 9 के अनुसार 76 प्रतिशत संगडक लेखाकंन 18 प्रतिशत लोगों के अनुसार बही खाता 6 प्रतिशत लोगों के अनुसार दोनों माध्यम में तकनीक अच्छी है। प्रश्न 10 के अनुसार 83 प्रतिशत संगडक लेखाकंन 12 प्रतिशत लोगों के अनुसार बही खाता व 5 प्रतिशत लोगों के अनुसार दोनों पद्धति में शुद्धता अधित रहती है।

VII निष्कर्ष

उक्त शोध में हम यह निष्कर्ष निकलता है कि लेखांकन का संगणक में अनुप्रयोग की लोकप्रियता दिन–प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है व लोग बहीखाता प्रणाली की अपेक्षा संगणक के माध्यम से की जा रही लेखांकन विधि को ज्यादा पसंद कर रहे है और भविष्य में लोग संगडक लेखाकंन के आदी होते ही जा रहे है व व्यापार जगत भी संगडक लेखाकंन पर ही निर्भर होते जा रहा है।

संदर्भ

[1] प्रोफेसर एस.पी. गुप्ता की प्रकाशित पुस्तक शीर्षक अनुसंधान संदर्शिकः वर्ष 2014 शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद उ.प्र.।

[2] प्रोफेसर एस.पी. गुप्ता की प्रकाशित पुस्तक शीर्षक अनुसंधान संदर्शिकः वर्ष 2014 शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद उ.प्र.।

[3] डी.के. गोयल, राजेश गोयल, शैली गोयल की प्रकाशित पुस्तक शीर्षक "एकाउन्टेन्सी" वर्ष 2017 आर्य पब्लिकेशन सिरमौर हि.प्र.।

[4] डा. ओ.पी. शर्मा, डॉ. के.के. शर्मा, डॉ. डी.के शर्मा के द्वारा प्रकाशित पुस्तक यू.जी.सी. /नेट/जे.आर.एफ./स्लेट/वाणिज्य में (2014) ।

[5] एम.जी. राठी, गिरीश कुसुमाकर द्वारा प्रकाशित पुस्तक लेखाकर्म (2017)

[6] एम.सी. बड़जात्या एवं डॉ. प्रवीन सक्सेना की प्रकाशित पुस्तक शिवलाल हायर सेकेण्डरी, बही खाता (2017)